भगवान बुद्ध के महाश्रावक

लकुण्डक भद्दिय

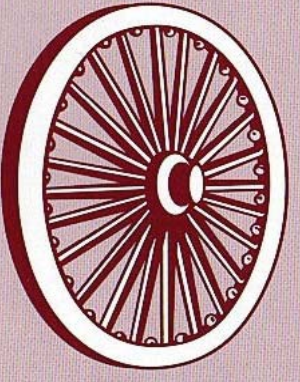

विपश्यना विशोधन विन्यास

भगवान बुद्ध के महाश्रावक

लकुण्डक भद्दिय

(मधुर स्वर वालों में 'अग्र')

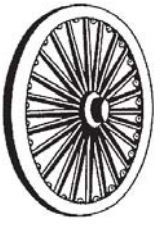

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

भगवान बुद्ध की उद्‌घोषणा

"एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं मञ्जुस्सरानं यदिदं लकुण्डकभद्दियो।"

"भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में मधुर-स्वर वालों में अग्र (श्रेष्ठतम) है 'लकुण्डकभद्दिय'।"

– अङ्गुत्तरनिकाय १.१.१९४

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय [VII]

लकुण्डक भद्दिय १

अतीत कथा २

वर्तमान कथा ३

माता-पिता का हत्यारा ४

परिशिष्ट (गाथाएं)

भद्दिय-वचन ५

बुद्ध-वचन ५

प्रकाशकीय

थेरगाथा की अट्ठकथा में भगवान बुद्ध के अस्सी 'महाश्रावकों' के नाम गिनाये गये हैं जो वर्णानुक्रम से निम्न प्रकार से हैं –

अङ्गुलिमाल, अजित, अञ्ञासिकोण्डञ्ञ, अनुरुद्ध, अस्सजि, आनन्द, उदय, उपवान, उपसिव, उपसेन, उपालि, उरुवेलकस्सप, कङ्खारेवत, कप्प, काळुदायी, किमिल, कुण्डधान, कुमारकस्सप, खदिरवनियरेवत, गयाकस्सप, गवम्पति, चूळपन्थक, जतुकण्णि, तिस्समेत्तेय्य, तोदेय्य, दब्ब, दारुचीरिय, धोतक, नदीकस्सप, नन्द (१), नन्द (२), नन्दक, नागित, नालक, पिङ्गिय, पिण्डोलभारद्वाज, पिलिन्दवच्छ, पुण्णक, पुण्णजि, पुण्ण मन्ताणिपुत्त, पुण्ण सुनापरन्तक, पोसाल, बाकुल, भगु, भद्दिय (१), भद्दिय (२), भद्रावुध, महाउदायी, महाकच्चायन, महाकप्पिन, महाकस्सप, महाकोट्ठिक, महाचुन्द, महानाम, महापन्थक, महामोग्गल्लान, मेघिय, मेत्तगू, मोघराजा, यस, यसोज, रट्ठपाल, राध, राहुल, लकुण्डकभद्दिय, वक्कलि, वङ्गीस, वप्प, विमल, सभिय, सागत, सारिपुत्त, सीवलि, सुबाहु, सुभूति, सेल, सोण कुटिकण्ण, सोण कोळिवीस, सोभित, हेमक।

इनमें महाश्रावक 'लकुण्डक भद्दिय' का नाम भी है। इस पुस्तिका में उन्हीं का संक्षिप्त जीवनवृत्तांत प्रस्तुत किया जा रहा है।

इन महाश्रावक की विशेषताएं निम्न प्रकार से हैं –

- भगवान के महाश्रावकों में वह सबसे छोटे कद के और अत्यंत बदसूरत थे। इसीलिए लोगों को उनका मजाक उड़ाने और उनसे खिलवाड़ करने में बड़ा आनंद आता था।

- कोई उनके साथ कैसा भी दुर्व्यवहार करे वे अपनी समता कभी नहीं खोते थे।

- वे भिक्षुओं के पीछे-पीछे चला करते थे ताकि उनकी नजर उन पर न पड़े और भिक्षुगण उनके साथ खिलवाड़ करते हुए अपुण्य के भागी न बन जायें।